जवाहर लाल नेहरू का समाजवादी चिंतन

सर्वजीत नाहर
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

सारांश

1927 की यूरोप यात्रा में जवाहर लाल नेहरू के दिमाग में रूसी समाजवादी समाज की छवि स्थायी घर कर गई। नेहरू की समाजवादी नीति के विचार थे कि भारत को एक शांतिपूर्ण, अहिंसात्मक और जनवादी मार्ग का अनुसरण करना चाहिए। 1931 में हुए करांची अधिवेशन के पश्चात् भारत के राष्ट्रीय आंदोलन में कांग्रेस का उद्देश्य देश में समाजवादी आर्थिक आन्दोलन लाना हो गया। इसके बाद अखिल भारतीय कांग्रेस ने दिल्ली के अधिवेशन में इस भाव का एक संकल्प पारित किया था कि कांग्रेस का यह उद्देश्य होना चाहिए कि वह ऐसा आर्थिक ढांचा निर्मित करें जो बिना निजी एकाधिकार के सृजित किये गये तथा धन को केन्द्रीकरण किये बिना अधिकतम् उत्पादन दे सकें। यह सोचा गया कि ऐसा सामाजिक ढांचा आर्थिक और राजनीतिक समानता की प्राप्ति के लिए विकल्प दे सकता है। माइकल ब्रेचर के शब्दों में, नेहरू के भाषण वामपंथ की उमड़ और भारत की अर्थव्यवस्था में समाजवाद की एक नई मात्रा करने के प्रयास से ओतप्रोत थे। नेहरू ने अपनी समाजवादी नीति के तहत कई कार्यक्रम लागू किये जैसे देशी रिसायतों का भारत राज्य में विलय एवम् जमींदारी व्यवस्था का उन्मूलन।1928 में ऐतिहासिक लाहौर कांग्रेस में अपने अध्यक्षीय भाशण में जवाहरलाल ने स्वीकारोक्ति की थी कि वह एक समाजवादी और गणतंत्रवादी हैं तथा राजाओं और राजकुमारों में या ऐसी किसी व्यवस्था में विश्वास नहीं रखते हैं जो आधुनिक औद्योगिक राजा बनाने वाली हो।

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 25.02.2019
Approved: 25.02.2019

सर्वजीत नाहर

जवाहर लाल नेहरू का समाजवादी चिंतन

RJPP 2019,
Vol. XVII, No. 1,
pp. 84-88
Article No.11

Online available at :
https://anubooks.com/?page_id=5286

प्रस्तावना

1927 की यूरोप यात्रा में जवाहर लाल नेहरू के दिमाग में रूसी समाजवादी समाज की छवि स्थायी घर कर गई, जिसे स्वयं नेहरू ने इन शब्दों में अभिव्यक्त किया– ''मेरा दृष्टिकोण विस्तृत हो गया था तथा राष्ट्रवाद मुझे निश्चयतः स्वयं में एक संकीर्ण और अपूर्ण मत प्रतीत होने लगा। स्वतंत्रता या राजनीतिक स्वाधीनता निःसन्देह अनिवार्य है किन्तु वे उसे उचित दिशा में चरण मात्र है क्योंकि समाज और राज्य में सामाजिक स्वतन्त्रता और समाजवादी संरचना के अभाव में व्यक्ति अथवा दर्शन का अधिक विकास संभव नहीं हो सकता।

फरवरी 1927 ई0 में नेहरू व उनके पिता मोतीलाल नेहरूजी ने सोवियत संघ के निमंत्रण पर जब वहाँ की यात्रा की तो उनके मन व मस्तिष्क पर उसका क्रांतिकारी प्रभाव पड़ा। नेहरू जी के चिंतन में हुए उस क्रांतिकारी परिवर्तन ने कांग्रेस के भी बडे भाग को आकर्षित किया।

1931 में हुए करांची अधिवेशन के पश्चात् भारत के राष्ट्रीय आंदोलन में कांग्रेस का उद्देश्य देश में समाजवादी आर्थिक आन्दोलन लाना हो गया। 1945 के कांग्रेस चुनाव घोषणा पत्र के अनुसार ''भारत की सर्वाधिक महत्वपूर्ण और आवश्यक समस्या यह है कि कैसे गरीबी के अभिशाप को मिटाया जाए और जनता के जीवन स्तर को ऊँचा किया जाए। यह घोषित करना था कि उस प्रयोजन के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्तियों और गुणों के हाथों धन और शक्ति का केन्द्र होने से निवारित किया जाए और समाज के शत्रुरूप स्थिर स्वार्थों को बढ़ने से रोका जाए। इसमें प्रस्थापित था कि साम्यपूर्ण प्रतिकार के संदाय पर मध्यवर्तियों की भूमि को अर्जित किया जाए। इसके बाद अखिल भारतीय कांग्रेस ने दिल्ली के अधिवेशन में इस भाव का एक संकल्प पारित किया था कि कांग्रेस का यह उद्देश्य होना चाहिए कि वह ऐसा आर्थिक ढांचा निर्मित करें जो बिना निजी एकाधिकार के सृजित किये गये तथा धन को केन्द्रीकरण किये बिना अधिकतम् उत्पादन दे सकें।

जवाहर लाल नेहरू की जीवनी लिखने वाले लेखकों ने भी लिखा कि 1953 ई0 में नेहरू ने अपने भाषणों में आर्थिक प्रगति तेज करने पर अधिकाधिक जोर दिया है। एम. ब्रेचर के शब्दों में, नेहरू के भाषण वामपंथ की उमड़ और भारत की अर्थव्यवस्था में समाजवाद की एक नई मात्रा करने के प्रयास से ओतप्रोत थे। 1936 ई. में लखनऊ में हुए कांग्रेस अधिवेशन के रूप में उन्होनें भारत एवं विश्व की समस्त प्रमुख समस्याओं के हल के लिए समाजवाद के ही रास्ते को अपनाने का आहवान किया, लेकिन इस समय तक नेहरू पर मार्क्सवादी समाजवाद का अत्यधिक प्रभाव होने के कारण वे समाजवाद की स्थापना के लिए किसी भी सीमा तक शक्ति के प्रयोग को अनुचित भी नही मानते थे। नेहरू की समाजवादी नीति के विचार थे कि भारत को एक शांतिपूर्ण, अहिंसात्मक और जनवादी मार्ग का अनुसरण करना चाहिए। नेहरू की नीति में नयी बातों को औपचारिक रूप से जनवरी, 1955 में अवाडी में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 60वें अधिवेशन से अनुमोदित कर दिया गया। नेहरू के शब्दों में अवाडी में लक्ष्य रखने का निर्णय लिया, कांग्रेस ने हमेशा कतिपय समाजवादी ढंग के समाज के बारे में सोचा था लेकिन अवाडी में उसने उसे औपचारिक रूप से स्वीकार किया ओर अपने सिद्धांत में सम्मिलित किया।

''प्रथम विश्व–युद्ध का अन्त जब से हुआ है, तब से भारत में राष्ट्रीय और सामाजिक दो समानान्तर क्रान्तियां चल रही हैं। स्वतंत्रता की प्राप्ति के साथ राष्ट्रीय क्रान्ति फिर भी चलती रहेगी। जैसा कि नेहरू ने कहा था कि स्वतंत्रता अपने आप में कोई लक्ष्य नहीं है, लक्ष्य को प्राप्त करने का साधन मात्र है और वह लक्ष्य है जनता को उठाकर ऊँचे स्तर पर ले जाना और उस प्रकार मानवता को आगे बढ़ाना। इस संविधान सभा का पहला काम यह है कि एक नया संविधान बनाकर भारत को स्वतंत्र बनाएं, भूखा मरने वाली जनता को खाना दें और नंगे रहने वाली जनता को कपड़ा दें तथा भारत के हर निवासी को अपनी क्षमता के अनुसार अपना विकास करने का पूरा–पूरा अवसर दें।''

1928 में ऐतिहासिक लाहौर कांग्रेस में अपने अध्यक्षीय भाषण में जवाहरलाल ने स्वीकारोंक्ति की थी– ''मैं यह स्पष्ट रूप से स्वीकार करता हूँ कि मैं एक समाजवादी और गणतंत्रवादी हूँ तथा राजाओं और राजकुमारों में या ऐसी किसी व्यवस्था में विश्वास नहीं रखता हूँ जो आधुनिक औद्योगिक राजा बनाने वाली हो। जिनके पास प्राचीन युग के राजा–महाराजाओं से भी अधिक शक्ति हो और जिनके तौर–तरीके प्राचीन समान्तों की तरह लूटमार करने वाले हों। तथापि, मैं यह मानता हूँ कि राष्ट्रीय कांग्रेस जैसी किसी संस्था द्वारा और देश की वर्तमान परिस्थितियों में पूर्ण रूप से समाजवादी कार्यक्रम अंगीकार करना संभव नहीं है, परन्तु हमें यह महसूस करना चाहिए कि समाजवाद की विचारधारा पूरे विश्व में समाज के सम्पूर्ण ढांचे में फैल गई और लगभग विवाद का प्रश्न केवल यह है कि पूरी तरह प्राप्त करने के लिये क्या गति और तरीके अपनाये जाये। यदि भारत अपनी गरीबी और असमानता समाप्त करना चाहता है तो उसे भी उस रास्ते पर चलना होगा। यद्यपि वह अपने तरीके बना सकता है और अपने लोगों की बौद्धिकता के अनुसार अपना सकता है।'' जवाहरलाल नेहरू ने 1929 में कहा था कि वर्तमान व्यवस्था में उद्योग का कार्य करोड़पति लोग पैदा करना है– ''इसलिए हमारी अर्थव्यवस्था मानवीय दृष्टिकोण पर आधारित होनी चाहिए और धन के लिए आदमी का बलिदान नहीं किया जाना चाहिये। यदि किसी उद्योग को उसके कामगारों को भूखे मारे बिना नहीं चलाया जा सकता है, तो वह उद्योग बंद हो जाना चाहिए। यदि देश में कामगारों को पर्याप्त खाना नहीं मिलता तो उन बिचौलियों को समाप्त करना होगा जो उन्हें उनके पूरे हिस्से से वंचित करते हैं। खेत या कारखानें का प्रत्येक कामगार कम से कम एक चीज का तो हकदार है ही, वह चीज है न्यूनतम मजदूरी जिससे वह अपना सामान्य जीवन निर्वाह कर सके और उतने मानवीय श्रम घण्टे जो उसकी षक्ति और उत्साह को न तोड़ दें।'' विष्व या भारत की समस्याओं के समाधान की एकमात्र कुंजी संसदीय लोकतंत्र एवं समाजवाद को अपनाना है। वह समाजवाद के झण्डे तले ''अव्यवस्थित मानवतावाद'' की कवायद का विरोध करते थे। अंतिम लक्ष्य वर्गहीन समाज स्थापित करने का होना चाहिए जिसमें आसान आर्थिक न्याय और सभी के लिए अवसर हों तथा वह सुनियोजित आधार पर व्यवस्थित एक ऐसा समाज हो जिसका उद्देष्य लोगों का भौतिक मूल्य, सहयोग, निःस्वार्थ की भावना, सही कार्य करने की इच्छा, परस्पर सद्भावना और अन्ततः एक विश्वव्यापी व्यवस्था स्थापित करना हो।''

नेहरू जी अपने इस विश्वास से नहीं डिगे कि केवल समाजवाद से ही निर्धनता समाप्त की जा सकती है और न्यायपूर्ण, समाजवाद में पर्दापण किया जा सकता है। 1957 में अखिल भारतीय कांग्रेस के अधिवेशन में बोलते हुए जवाहरलाल ने कहा था कि– ''सम्पूर्ण पूँजीवादी ढांचा एक प्रकार के अर्थ लोलुप समाज पर आधारित है। शायद कुछ सीमा तक अर्थ–लोलुपता की प्रवृत्ति हम में भी अन्तर्निहित है। एक समाजवादी समाज को उपार्जनशीलता की इस प्रवृत्ति से छुटकारा पाने का प्रयास करना चाहिए और उसके स्थान पर सहयोग की प्रवृत्ति अपनानी चाहिए।'' नेहरू ने अपनी समाजवादी नीति के तहत कई कार्यक्रम लागू किये जैसे देशी रिसायतों का भारत राज्य में विलय, जमींदारी व्यवस्था का उन्मूलन करके तथा धर्म निरपेक्ष राज्य के आदर्श को अपना कर भारत में परम्परागत सांमती व्यवस्था के आधार को जोड़ा गया प्रमुख निजी उद्योगों का राष्ट्रीकरण किया गया, सार्वजनिक क्षेत्र का निरंतर विस्तार किया गया, साथ ही निजी क्षेत्र पर सामाजिक नियंत्रण की नीति को लागू किया गया। पंचवर्षीय योजनाओं के आकार में वृद्धि की गई। इनके निर्माण में समाजवादी कार्यक्रम को स्थान दिया गया। ग्रामीण जीवन की समृद्धि के लिए सामुदायिक विकास खण्ड़ो की स्थापना की गई तथा राजनीतिक आर्थिक सता में पंचायत राज व्यवस्था को लागू किया गया, समाज के कमजोर तथा पिछडे वर्ग के जीवन कस्तर को उठाने के लिए विभिन्न सामाजिक आर्थिक कल्याण के कार्यक्रमों को लागू किया गया।

नेहरू के समय में कांग्रेस का औपचारिक ध्येय रहा 'समाजवादी ढंग का समाज'। 1964 ई. के कांग्रेस के भुवनेश्वर अधिवेशन में इस ध्येय की शाब्दिक अभिव्यक्ति को कुछ बदल दिया गया। अब कांग्रेस के नेता 'समाजवादी राज्य' की स्थापना, भारतीय समाज में 'आर्थिक और सामाजिक संबंधो में क्रांति' जनवाद मानव गरिमा और सामाजिक न्याय पर आवरित समाजवाद की खोज करने की बाते करने लगे लेकिन उन्होने अपने इस ध्येय में परिवर्तन या सामाजिक नीति की दिशा में गंभीर बदलाव करने के यथार्थ मार्ग नहीं निर्धारित कियें। नेहरू की समाजवादी नीति की सबसे बडी सफलता यही रही की इसने भारत में एक बडे तथा मजबूत मध्यवर्ग की स्थापना की है। नेहरू का मत था कि आर्थिक उन्नति के प्रयासों में जनता की सचेतन स्वतंत्र और सार्थक भागीदारी को सुनिश्चित किया जाये तथा समस्त आर्थिक योजनाओं का उद्देश्य किसी वर्ग विशेष के हितों को प्रोत्साहन देना नहीं बल्कि सारी जनता के कल्याण और जीवन स्तर में उन्नति को सुनिश्चित करता हो।

नेहरू ने समाजवाद की व्यवहारिक व्याख्या करते हुए कहा था– मुझे विश्वास है कि भारत की समस्याओं का समाधान समाजवाद में है और जब में इस शब्द का प्रयोग करता हूँ तो में इसे केवल अस्पष्ट व मानववादी रूप मे अपितु वैज्ञानिक और आर्थिक दृष्टि से देखता हूँ। समाजवाद एक आर्थिक सिद्धान्त के अतिरिक्त भी और कुछ है, यह एक जीवन दर्शन है, उसी कारण यह मुझे प्रिय है। मुझे गरीबी बेरोजगारी और भारतीय लोगों की दुर्दशा को समाजवाद के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग दिखाई नहीं पड़ता इसका अर्थ यह है कि हमारे सामाजिक, राजनितिक और आर्थिक ढांचे में क्रातिकारी परिवर्तन करनें होंगे। नेहरू के नेतृत्व में भारतीय संसद ने 1955 ई. में सामाजिक पुनर्निमाण के वे प्रतिमान स्वीकार किए जिन्हें सामूहिक रूप में समाज का

समाजवादी ढांचा कहा जाता है। अतः मिश्रित अर्थव्यवस्था का उनका प्रयोग लोकतांत्रिक समाजवाद के प्रति उनके वैचारिक आग्रह का ही व्यवहारिक परिणाम कहा जा सकता है।

संदर्थ ग्रंथ

[1]जवाहर लाल नेहरू की आत्मकथा, 24वाँ कॉलम।

[2]इण्डियन नेशनल कांग्रेस, रिजोल्यूशन्स ऑन इकानॉमिक पॉलिसी, प्रोग्राम एण्ड अलाइड मैटर्स 1924–1954, नई दिल्ली, 1954, पृष्ठ–**14**।

[3]इण्डियन नेशनल कांग्रेस, रिजोल्यूषन्स ऑन इकानॉमिक पॉलिसी, प्रोग्राम एण्ड अलाइड मैटर्स 1924–1954, नई दिल्ली, 1954, पृष्ठ– **15–16**

[4]इण्डियन नेशनल कांग्रेस, रिजोल्यूषन्स ऑन इकानॉमिक पॉलिसी, प्रोग्राम एण्ड अलाइड मैटर्स 1924–1954, नई दिल्ली, 1954, पृष्ठ– **18–19**।

[5]वर्मा श्रीराम भारतीय राजनीतिक विचारक प्रकाशक, कॉलेज बुक सेक्टर जयपुर, 2008, पृष्ठ **468–469**।

[6]जवाहर लाल नेहरू, स्पीचेस, वोल्यूम 4, पृष्ठ **129**।

[7]ग्रेनविल आस्टिन, दि इंडियन कांस्टीटयूषन, कार्नरस्टोन ऑफ ए नेषन, प्रथम भारतीय संस्करण, 1972, पृष्ठ–**26**।

[8]जवाहरलाल नेहरू का अध्यक्षीय भाशण, 29 दिसम्बर, 1929 ए०एम० जैदी, कांग्रेस अध्यक्षीय भाषण, खण्ड 4, 1925–39, इंडियन इंस्टीटयूट ऑफ एप्लाइड पोलिटिकल रिसर्च, नई दिल्ली, 1988।

[9]जवाहरलाल नेहरू, एन आटोबायोग्राफी, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 1982, पृष्ठ– **551–52**।

[10]ए०एम० जैदी, कांग्रेस अध्यक्षीय भाशण, खण्ड–5, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 62वें अधिवेषन के सम्मुख नेहरू का अध्यक्षीय भाशण, इन्दौर, 4 जनवरी, 1957।

[11]वर्मा श्रीराम भारतीय राजनीतिक विचारक प्रकाशक, कॉलेज बुक सेक्टर जयपुर, 2008, पृष्ठ **286**।

[12]मर्तशिन ओ. व. जवाहरलाल नेहरू और उनके राजनीतिक विचार, प्रगति प्रकाशन, मास्कों, पीपुल्स पब्लिशिंग हाऊस लिमिटेड नई दिल्ली, राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर, हिन्दी अनुवाद प्रगति प्रकाशन–1990, पृष्ठ–**142**।

[13] चतुर्वेदी मधुकर श्याम, प्रमुख भारतीय राजनीतिक विचारक, प्रकाशक, कॉलेज बुक हाऊस, जयपुर, 15वॉ संस्करण, 2007, पृष्ठ–**390**।

[14]चतुर्वेदी मधुकर श्याम, प्रमुख भारतीय राजनीतिक विचारक, प्रकाशक, कॉलेज बुक हाऊस, जयपुर, 15वॉ संस्करण, 2007, पृष्ठ–**390–391**।

[15] गाबा ओम प्रकाश, राजनीतिक–विचारक विश्वकोश, प्रकाशन नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, शाखा जयपुर, संस्करण, 2005, पृष्ठ–**286**।